Fundamental Unity among Diversities in India

भारतीय समाज व संस्कृति में पाई जाने वाली उपरोक्त विभिन्नताओं के बावजूद इनमें कुछ मौलिक एकता भी विद्यमान है जो निम्नलिखित है:-

भौगोलिक एकता - यद्यपि भारतवर्ष को भौगोलिक दृष्टिकोण से कई क्षेत्रों में विभक्त किया जा सकता है, परंतु संपूर्ण देश विशेष सीमाओं द्वारा सुरक्षित, अटूट भारतवर्ष के नाम से विख्यात है। इस विशाल देश के अंदर न तो ऐसी पर्वत मालाएं है और न ही ऐसी सरिताएं अथवा गहन वन है, जिनको पार नहीं किया जा सकता। अतः भारत एक संपूर्ण भौगोलिक इकाई है। इसके अतिरिक्त भारत में हिमालय की विशाल पर्वत-माला तथा दक्षिण में समुद्र ने सारे भारत में एक विशेष प्रकार की ऋतु पद्धति बना दी है। गर्मी की ऋतु में जो सूर्य बादल बनकर उठती है वह हिमालय की चोटियों पर बर्फ के रूप में जम जाते है और सभी गर्मियों में पिघलकर नदियों की धाराएं बनकर बादल समुद्र में चले जाते है। इसके पश्चात बरसात आती है और यह ऋतु चक्र संपूर्ण देश में एक सा है। अतः स्पष्ट है कि भारत में पूर्ण भौगोलिक एकता विद्यमान है।

2) राजनीतिक एकता - राजनीतिक दृष्टिकोण से भी भारत एक एक

रहा है। इसमें संदेह नहीं कि भारत में सदैव
अनेक राज्य विद्यमान रहे, परंतु भारत के सभी
महत्वाकांक्षी सम्राटों का ध्येय संपूर्ण भारत पर
अपना एकछत्र साम्राज्य स्थापित करने का रहा है।
और इसी ध्येय से सार्वभौम, वाजपेय, अश्वमेध
आदि यज्ञ किए जाते थे और एकराट, राजाधिराज,
चक्रवर्ती आदि उपाधियों से सम्राट शासन को
विभूषित करते और इस अनुभूति को व्यक्त करते
थे कि भारत की विभिन्न भूखंड राजनीतिक आधार
पर भी वास्तव में एक है। प्राचीन युगों में इस
प्रकार के अनेक, राजाओं और सम्राटों की गाथायें
मिलती हैं जिन्होंने उत्तर में हिमालय से दक्षिण के
कन्याकुमारी अंतरीप तक और पूर्व में आसाम से
सिंध तक, अपना एकछत्र साम्राज्य बना लिया था।
मध्य युग के कई मुसलमान सुल्तानों और
बादशाहों, (जैसे अलाउद्दीन, अकबर, औरंगजेब आदि)
द्वारा संपूर्ण भारत पर राज्य करने के प्रयत्न किए
गए और वे सफल भी हुए, आधुनिक युग में
अंग्रेजी शासनकाल में भी यही हुआ और भारत भी
राजनीतिक आधार पर संपूर्ण भारत एक ही है।
राजनीतिक एकता और राष्ट्रीय भावना के आधार
पर ही राष्ट्रीय आंदोलनों व स्वतंत्रता संग्राम में
देश के विभिन्न प्रांतों के निवासियों ने दिल खोलकर
सक्रिय भाग लिया और अपने प्राणों की बाजी
लगा दी।

5)